37689

कुल पृष्ठ संख्या–28 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या.........................

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें ।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ☐

विषय संस्कृत वाङ्मय

परीक्षा का दिन बुधवार

दिनांक 18/02/26

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।
(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15¼ को 16, 17½ को 18, 19¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	18	19	3½
2	6	20	4
3	12	21	–
4	2	22	–
5	~~5~~ 2	23	–
6	2	24	–
7	2	25	–
8	2	26	–
9	2	27	–
10	2	28	–
11	2	29	–
12	2	30	–
13	2	31	–
14	3	योग	78
15	~~3~~ 2½	प्राप्त अंको का कुल योग (Round off)	
16	2	अंकों में	शब्दों में
17	3	78	अठहत्तर
18	4		

परीक्षक के हस्ताक्षर.......[signature]....... संकेतांक 4 0 1 4 5

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में बोर्ड द्वारा प्रदत्त 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 177/2024

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समा लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्य की जा सकेगी :–
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अल अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अं नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनु पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्र का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनु सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		"खण्ड - अ"
1×18=(18)		
1	1.	i) द) विधिसूत्रम
1		ii) अ) इञ्
1		iii) स) खञ्
1		iv) ब) यत्
1		v) ब) भैक्षम्
1		vi) द) लृटलकार:
1		vii) स) ब्लि
1		viii) अ) स्यतासीलृलुटो:
1		ix) ब) आर्धधातुकम्
1		x) द) गौरसिंह
1		xi) स) शिववीर:
1		xii) ब) दुर्जन:

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1		xiii) अ) सुजनता
1		xiv) स) आचार्यानी
1		xv) द) पितामहः
1		xvi) स) द्वादश
1		xvii) अ) बुधः
1		xviii) ब) सप्तविंशतिः
1×6=6		
1	2.	i) युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च।
1		ii) तेन दीव्यति खनति जयति जितम्।
1		iii) तिङ् शित् सार्वधातुकम्।
1		iv) शिवराजविजयस्य कथावस्तुः त्रिषु विरामेषु विभक्तमस्ति।
1		v) भगिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः।
1		vi) अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी तथा।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1×12=12		
1	3.	i) 'काकम' इत्यत्र अण् प्रत्ययः स्यात्।
1		ii) 'बादरिकः' इत्यत्र ठक् प्रत्ययः स्यात्।
1		iii) भवति इत्यत्र भू धातोः।
1		iv) शिववीरेण
1		v) असिधाराव्रतं सतां विद्यते।
1		vi) तरवः फलोद्गमैः नम्राः भवन्ति।
1		vii) अर्घा
1		viii) अश्विवी अश्विवी
1		ix) बहुवचनम्
1		x) स्त्रीलिंगम्
1		xi) सूर्यः / रविः
1		xii) मेष राशिः

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ब

(2) 4. राजनः

राज्ञः अपत्यम इति लौकिक विग्रहे, राजन ङस इति अलौकिक विग्रह। "तस्यापत्यम" इति सूत्रेण अण प्रत्ययः स्यात। राजन ङस अण इति जाते। "कृततद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायाम राजन ङस अण इति स्यात। "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" इति सूत्रेण सुबन्त प्रत्यय लोप स्यात। राजन अ जायते। अनुबन्धलोपे णस्य इत्संज्ञायाम राजन अ इति स्यात। पुनः प्रातिपदिक संज्ञायाम राजन इति जाते। स्वौजसम - औट् - शस - टा - भ्याम - भिस - ङे - भ्याम - भ्यस - ङसि - भ्याम - भ्यस - ङस - ओस - आम - ङि - ओ - सुप इति सूत्रेण सु प्रत्यये राजन + सु इति जाते। उपदेशेऽजनुनासिक मित इति सूत्रेण उकारस्य इत्संज्ञायाम, ससजुषो रुः इति सूत्रेण रुत्वे, खरवसानो - विसर्जनीयः इति सूत्रेण विसर्गे, "राजनः" इति रूपं स्यात।

"राजनः" इति रूपं सिद्धम ॥

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	5.	भवथ

भू धातोः सत्तायाम् इत्यर्थे कर्तरित्व विवक्षायां "वर्तमाने लट्" इति सूत्रेण लट्लकारे मध्यम पुरुष बहुवचनम् । भू + लट् इति अवस्थायां, "तिप् - तस् - झि - सिप् - थस् - थ - मिप् - वस् - मस् ताऽऽतांझ - थासाथांध्वमिड् - महिङ्" इति सूत्रेण 'थ' प्रत्यये, भू + थ इति स्यात् ।
"तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इति सूत्रेण सार्वधातुक संज्ञायाम् "कर्तरि शप्" इति सूत्रेण शप् प्रत्यये भू शप् (अ) थ इति स्यात् ।
"सार्वधातुकार्धधातुकयोः" इति सूत्रेण सार्वधातुक परस्य इगन्तङ्गस्य गुण स्यात् । भो अ थ इति जायते । "एचोऽयवायावः" इति सूत्रेण ओकारस्य अवादेशे, भव अ थ इति जाते । पुनः प्रातिपदिक संज्ञायाम् "भवथ" इति जाते ।
"भवथ" इति रूपं सिद्धम् ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	6.	भूयात

भू धातोः सत्तायाम इत्यर्थे, कर्तरिच विवक्षायं आशीर्लिङ्लकार प्रथमपुरुषैकवचने स्यात। "आशिषि लिङ्लोटौ" इति सूत्रेण आशीर्लिङ्लकार, भू + लिङ् इति स्यात। तिप - तस - झि - सिप - थस - थ, - मिप - वस मस - ताऽऽताञ्-झ-थासाथांध्वमिड् - महिङ् इति सूत्रेण तिप प्रत्यये, भू + तिप (ति) इति जाते, लिङाशिषि इति सूत्रेण आर्धधातुक संज्ञा, यासुट् परस्मैपदेषुदात्तो ङिच्च इति सूत्रेण यासुट् आगम, भू यासुट (यास) इति जाते, ~~ति~~ भू यास ति इति स्यात। ~~लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य~~ स्कोः संयोगाद्योरन्ते च इति सूत्रेण सलोपे भू या ति इति जाते, इतश्च इति सूत्रेण इलोपे भू या त इति जाते।

भूयात इति रूपं सिद्धम्।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(2) 7. सूत्रावतरणम् –

" वरणादिभ्यश्च "

इदं विधिसूत्रं वर्तते। एकपदात्मकम् इदं सूत्रम्। वरणादिभ्यः च इति पदच्छेदः। वर्णादिभ्यः इति पञ्चम्यन्तं पदं अस्ति।

वृत्तिः → इति सूत्रेण अञ् प्रत्ययः लोपः स्यात्।
च इति जनपदे लुप् इति अनुवृत्तिः।

उदाहरणम् → ~~वैदिशम्~~ – ~~विदिशायाः अदूरभवं~~
वरणाः – वरणानाम् अदूरभवं

BSER-177/2024

P.T.O

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(2) 8. पण्डित अम्बिकादत्तव्यासः संस्कृतसाहित्यक्षेत्रे प्रमुख स्थानं भजते।
कविः स्वकीयः सामवतनाटके स्वपरिचयं ददाति

"जातो जयपुरनगरे, वाराणस्यां तथा कलित सत्वर कविता सविता, गौडः कोऽप्यम्बिकादत्तः॥

प्रमुख रचना वर्तते :-
i) शिवराजविजयम् → ऐतिहासिक उपन्यासः अ
ii) गणेशशतकम्
iii) सामवतनाटकम्
iv) रेखागणितम्
v) कथाकुसुमम्

---

(2) 9. कविः भर्तृहरिः संस्कृतसाहित्यक्षेत्रे प्रमुखस्थानं वर्तते।
प्रमुख रचना - नीतिशतकम्
श्रृंगारशतकम्
वैराग्यशतकम्
वाक्यपदीयम्

नीतिशतकम् मुक्तक काव्य अस्ति। नीतियुक्त सर मधुरं च छन्दस्य विशाल संग्रहः अस्ति। सरल भाषायाम् महान कृतिः अस्ति। "शीलं प भूषणम्" आदि महान सूक्तयः संकलनं अस्ति

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	10.	वीरस्य भार्यायाः i) वीरपत्नी ii) वीरभार्या
2	11.	पत्नीपत्योः त्रीणि नामानि :- i) दंपती ii) जंपती iii) जायापती
2	12.	पञ्चादश तिथीनां :- प्रतिपत् द्वितीया तृतीया चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी अष्टमी नवमी दशमी एकादशी

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		द्वादशी
		त्रयोदशी
		चतुर्दशी
		कृष्णपक्षे अमावस्या शुक्लपक्षे च पूर्णिमा
2	13.	योगाः सप्तविंशतिः भवन्ति ।
		तेषु पञ्च नामानि :-
		i) विषकम्भः
		ii) प्रीतिः
		iii) आयुष्मान
		iv) सौभाग्यम्
		v) शोभनः

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

"खण्ड - स"

1½+1½=3 14. ख)

1½

सूत्रावतरण :-

"क्रमादिभ्यो वुन"

इदं सूत्र विधिसूत्रम वर्तते। द्विपदात्मकम इदं सूत्रं। क्रमादिभ्य : वुन इति पदच्छेद : । इति सूत्रेण प्रत्यय स्यात । तदधीते तदवेद इति अनुवृत्ति। तेन सूत्रस्य अर्थो भवति यत -

"क्रमादिगणपठित शब्देभ्यो । सुबन्त प्रातिपदिकात वुन प्रत्यय स्यात"।

उदाहरणम :-

क्रमक : - क्रमम अधीते, क्रम अम ~~अम~~ वुन
पदक : - पदम अधीते, पद् अम वुन
शिक्षक : - शिक्षाम अधीते, शिक्षा अम वुन
मीमांसक : - मीमांसाम अधीते, मीमांसा अम वुन

विशेष सूत्र :-

"युवोरनाकौ" इति सूत्रेण वु स्थाने अकादेशे "।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1½

ग)

सूत्रावतरण :-

"ग्रामाद्यखञौ"

इदं सूत्रम विधिसूत्रम स्यात। एकपदात्मकम इदं सूत्रम। ग्रामाद् य खञौ इति पदच्छेद: ग्रामाद् पञ्चम्यन्तं एकवचन पदमस्ति। इदं सूत्रेण द्वौ प्रत्ययौ स्यात। तेन सूत्रस्य अर्थो भवति यत -

"ग्राम शब्दात क्रमश: य खञ च इति द्वौ प्रत्ययौ स्यात"।

उदाहरणम :

i) ग्राम्य: - ग्रामे जातो भवं वा

ii) ग्रामीण: - ग्रामे जातो भवं वा

विशेष कार्य :-

"आयनेयीनीयिय: फढखछघां प्रत्ययादीनां" इति सूत्रेण खस्य स्थाने ईन् स्यात। यथा - ग्रामीण:।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1 1/2 (2 1/2) 15. क)

श्लोकः - विपदि - - - - महात्मनाम् ||

संदर्भः - इदं श्लोकः कवि: भर्तृहरि: विरचितम् नीतिशतकम नामक मुक्तखण्डकाव्यात उद्धृतः अस्ति |

1 प्रसंग : - अस्मिन श्लोके कविः कथ्यति यत महात्मनाम् प्रकृति केषाम् भवति |

पदच्छेद : - विपदि धैर्यम अथ अभ्युदये क्षमा,
सदसि वाक्पटुता, युधि विक्रमः,
यशसि च अभिरुचिः व्यसनं श्रुतौ,
प्रकृति सिद्धं इदं हि महात्मनाम् |

अन्वयः - अथ विपदि धैर्यम, अभ्युदये क्षमा,
सदसि वाक्पटुता, युधि विक्रमः,
यशसि च अभिरूचिः, श्रुतौ व्यसनं,
इदं हि महात्मानाम् प्रकृति सिद्धम् |

1 1/2 (2) व्याख्या :- अथ - निरंतरम्, विपदि - विपत्ति, आपत्ति काले, धैर्यम् - साहसम, अभ्युदये - समृद्धिकाले, क्षमा - क्षमा, सदसि - सभायाम, वाक्पटुता - वाक् चातुर्य, युधि - रणक्षेत्रे, युद्धभूमौ, यशसि - कीर्ति, च अभिरुचिः → विशेष रुचिः, श्रुतौ - शास्त्रज्ञानम

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

व्यसनम - अभ्यासं , इदं - इयम ,
निश्चयेन - हि , महात्मानाम - सज्जनानाम
प्रकृतिसिद्दम → नैसर्गिक सिद्दम ।

भावार्थ :- कविः उपदिशति यत् आपत्तिकाले धैर्यम , समृद्धिकाले क्षमा , सभायाम वाक्चातुर्य , युधि रणभूमौ पराक्रमः , कीर्ति अभिरुचिः , शास्त्रज्ञानम व्यसनं एतानि सर्व गुण महात्मानाम स्वभाव सिद्दं अस्ति ।

व्याकरणं :- महात्मानाम - महान आत्मा यस्य सः (बहुव्रीहि)

कोष :- विपदि आपत्ति इत्यमरः ।
महात्मनाम सज्जनानाम ।

गुण :- प्रसाद
रीति :- वैदर्भी
छन्दः :- द्रुतविलम्बितम

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1+1+0 = 2	16.	
1		क) देवालयं परितः भक्ताः सन्ति।
1		ङ) रामः अश्वात अपतत।
0		ख) चित्तः सत्तेण शुद्दं भवति।
1+1+1 = 3	17.	
1		ख) गुरुः छात्रेभ्यः विद्यां ददाति।
1		ग) ते बालकाः पुस्तकं पठन्ति।
1		घ) बालकः गुरुम पुस्तकं याचते।

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

"खण्ड - द"

2+2=4 18. क) दाक्षिः

2

दक्षस्य अपत्यम् इति लौकिक विग्रहे, दक्ष ङस् इत्यालौकिक विग्रहे। "अत इञ्" इति सूत्रेण इञ् प्रत्यये अपत्याऽर्थे, दक्ष ङस् इञ् इति जाते। कृत्तद्धितसमासाश्च इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायाम् दक्ष ङस् इञ् इति जाते। सुपोधातुप्रातिपदिकयोः इति सूत्रेण सुप् लोपे। दक्ष इञ् इति जाते। अनुबन्ध लोपे दक्ष इ इति स्यात्। तद्धितेष्वचामादेः इति सूत्रेण आदिवृद्धि स्यात्, दाक्ष इ इति जाते, यचि भम् इति सूत्रेण भसंज्ञायाम्, यस्येति च इति सूत्रेण अ लोपे दाक्ष् इ इति जाते। पुनः प्रातिपदिक संज्ञायाम् दाक्षि इति जाते। स्वौजस - अम - औट - टा - भ्याम - भिस - ङे - भ्याम - भ्यस - ङसि - भ्याम - भ्यस - ङस - ओस - आम - ङि - ओ - सुप इति सूत्रेण सु प्रत्यये, ससजुषो रुः रुत्वे विसर्गे इति सूत्रेण विसर्गादेशे, दाक्षिः इति रूपं सिद्धम्।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

घ) धार्मिकः

धर्मं चरति इत्यर्थे, धर्म अम चरति इति लौकिक अलौकिक च विग्रहः। धर्मं चरति इति सूत्रेण ठक् प्रत्यये अनुबन्ध लोपे, धर्म अम ठ इति जाते। सुपोधातुप्रातिपदिकयोः इति सूत्रेण सु लोपे, धर्म ठ इति जाते। ठस्येकः इति सूत्रेण ठस्य इकादेशे, धर्म इक इति जाते। किति च इति सूत्रेण आदिवृद्धि स्यात्। धार्म इक इति जाते। यचि भम् इति सूत्रेण भसंज्ञायाम्, यस्येति च इति सूत्रेण अ लोपे धार्म् इक इति जाते, पुनः प्रातिपदिक संज्ञा धार्मिक इति स्यात्। स्वौजसमौट - अम् - औट् - शस - टा - भ्याम - भिस - ङे - भ्याम - भ्यस, ङसि - भ्याम - भ्यस, ङस - ओस - आम - ङि - ओ - सुप इति सूत्रेण सु प्रत्यये धार्मिक + सु इति जाते। ससय रुत्वे विसर्गे इति सूत्रेण विसर्गादेशे, धार्मिकः इति जायते। धार्मिकः इति रूपं सिद्धम्।

2

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1+2½=3½	19.	क)

गद्यांशः- ततः — — — ध्वनिमिवाऽश्रौषीत।

संदर्भः → इदं गद्यांशः पण्डितः अम्बिकादत्तव्यासेन विरचितम् शिवराजविजयम् नामक ग्रन्थात् उद्धृतः।

1 प्रसंग → अस्मिन् गद्यांशे कविः कथयति यत् दौवारिकः केषाम् अस्ति।

2½ पर्यायशब्दाः → ततः - ततः, संवृत्ते - संवृत्ते, किञ्चित् → ईषत्, अन्धकारे - तमे, धूप-धूमेनेव - प्रकाशेनेव, व्याप्तासु - व्याप्त, हस्तेसु भुशुण्डी → आग्नेयास्त्रं, स्कन्धे - कन्धे, निधाय - स्थापयित्वा, निपुणं - चतुरम्, निरीक्षमाणः → निरीक्षम कृतः, आगत - प्रत्यागतञ्च → आगच्छत गच्छतञ्च, विद्धानः, प्रतापदुर्ग - यन्नामक दुर्ग, दौवारिकः → द्वारपालः, कस्यापि, पादक्षेपध्वनिम् → चरणक्षेप ध्वनिम्, अश्रौषीत → आकर्णयसि।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

व्याख्या → व्यांप्त अन्धकारे दीपकस्य प्रकाशे प्रतापदुर्गस्य निपुण दौवारिकः स्कन्धे आग्नेयास्त्र स्कन्धे स्थापयित्वा इतः ततः च निरीक्षम् कृतः। तदैव कस्य अपि चरणक्षेपध्वनिम् अश्रौषीत।

विशेषः → धूमेनेव - धूमेन एव (आद्‌गुणः) इति सूत्रेण गुणसन्धिः।
कस्यापि - कस्य + अपि (दीर्घ सन्धि)
स्कन्धे → सप्तमी विभक्त्यान्त एकवचनं।

P.T.O

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(4) २०. क) "परोपकाराय सतां
विभूतय:"

परोपकाराय वहन्ति नद्य:,
परोपकाराय फलन्ति वृक्षा:।
परोपकाराय दुहन्ति गावं,
परोपकारार्थमिदं शरीरम् ॥

वयं मनुष्या: सन्ति। वयं व्यक्तित्वस्य निर्माणे अहिंसा, सत्य, अचौर्य, जीवदया, परोपकार: इत्यादय: महान गुणा: सहायका: भवन्ति। प्रकृति: वयं उपरि महान उपकार: कृत:।
परोपकार: अर्थात परेषां उपकार:। स्वस्वार्थानां त्यक्त्वा परहिताय क्रियमाणं कार्यं, परोपकार: इत्युच्यते। परोपकार: कृत्त्वेन प्रसन्नतां प्राप्नोति। पिपासेभ्यो जलम्, वस्त्रहीनेभ्यो वस्त्रम्, निर्धनेभ्यो धनम्, अशिक्षाभ्य: शिक्षा आदि महान पुण्यस्य कार्या: सन्ति। तदुक्तं भर्तृहरि: नीतिशतकम् :-

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन,
दानेन पाणिर्नतुकङ्कणेन।
विभाति काय: करुणापराणां,
परोपकारै र्न तु चन्दनेन।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अर्थात श्रोत्रं कुण्डलेन न विभाति अपितु श्रुतम्, दानेन पाणिः विभाति करवलयेन न, कायः चन्दनेन न अपितु परोपकारैः विभाति। अतएव वयम् परोपकारः कुर्मः। परोपकारः महान धर्मोऽस्ति। सर्वशास्त्राणां सारः परोपकारेव अस्ति। परोपकारः सर्व मनुष्याणां मूल कर्त्तव्यः अस्ति। अतएव कथयति -

अष्टादश पुराणेषु,
व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकाराय पुण्याय,
पापाय परपीडनम्॥

वयं मातापितरौ गुरुः च अपि महान उपकारी अस्ति।

" इति समाप्तम "

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

...क द्वारा ...त्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024